International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यथार्थ चित्राण की कसौटी पर माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य

डॉ0 अनिल कुमार
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
वैश्य महाविद्यालय भिवानी।

साहित्य में यथार्थपरक दृष्टि से अभिप्राय रचनाकार द्वारा अपने भौतिकवादी–वैज्ञानिक चिंतन और ज्ञान के आधर पर सामाजिक जीवन के वास्तविक रूप का सच्चा चित्राण करने से है। रचनाकार की यह दृष्टि रचना को यथार्थवादी ही नहीं बनाती, बल्कि उसे भाववादी–आदर्शवादी मूल्यों, कलावाद तथा अमूर्त्तीकरण के खतरों से मुक्त करती है।

हिन्दी साहित्य में यथार्थ चित्राण आधुनिक युग की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति रही है, जब भारतीय समाज के राजनीतिक–सांस्कृतिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन की युगांतकारी प्रक्रिया घटित हो रही थी। भारतीय जनता के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में शोषित मानवों की मुक्ति के लिए यह कठोर संघर्ष का युग रहा है। प्रथम विश्व–यु(और द्वितीय विश्व–यु(के बीच साम्राज्यवादी शक्तियों के आत्मघाती टकराव और औपनिवेशिक शोषण ने सम्पूर्ण विश्व में मानव–मुक्ति के लिए संघर्षों की प्रक्रिया को अध्काध्कि तेज कर दिया था। ऐसे ही क्रान्तिकारी संघर्ष के युग में पं0 माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को गहराई से परखते हुए युग की वास्तविकता को अपने काव्य में चित्रित किया है।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में समाज के उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति और सामान्य की प्रतिष्ठा का प्रबल भाव दिखाई पड़ता है। किसान–वर्ग भारतीय–समाज का आधर था, लेकिन वही सबसे ज्यादा उपेक्षित होने के साथ–साथ अंधविश्वासों और रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। माखनलाल चतुर्वेदी किसान–जीवन की इस अवस्था को देखकर अत्यध्कि दुःखी होते थे और उसकी इस स्थिति का कारण तद्युगीन सामाजिक परिस्थितियों में ढूँढकर उसके शोषणकर्त्ताओं को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते हैं। माखनलाल चतुर्वेदी

किसान को समाज की सबसे अध्कि क्रान्तिकारी शक्ति मानते थे इसीलिए उसकी मुक्ति के भावों को स्वर देना, उनके काव्य का प्रमुख अंग बन गया था। भारतीय किसान की समाज में दयनीय स्थिति का चित्राण करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी सुप्रसि(कविता 'क्रन्दन' में लिखा था –

खा रहे हो अÂ? मरनासÂ–
मेरी हच्स्त्रियों का स्वाद कैसा लग रहा है?
सुलगना चाहा? नहीं मेरे हृदय का क्रोध् आज सुलग रहा है।
चूसते हो पफल सँभालो–
रक्त मेरा भर रहा है सब पफलों में,
और वह भी झर रहा है, जो झरा करता अभागे दृगजलों में।
कंद मत खोदो, हमारे–
हैं गड़े बच्चे उन्हीं के पास भगवान्,
वायु का स्वर है? सिसकियाँ है हमारी और क्रन्दन।
तुम बड़े हो रहो,
छोटापन हमारा पर न छीनों!
रोटियाँ छोड़ो–भले ही ले चुकों दुर्भाग्य! तुम, ये लोक तीनों।[1]

समाज में किसान ही नहीं, बल्कि शोषण और दमन के शिकार प्रत्येक वर्ग के प्रति माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी संवेदना व्यक्त की है। उपेक्षित के प्रति करुणा और उसके उन्नयन का भाव माखनलाल चतुर्वेदी की सृजनात्मक–शक्ति थी। उपेक्षित–वर्ग के प्रति करुणा माखनलाल चतुर्वेदी के निजी अनुभवों का कुल निचोड़ था–

रे भाई मदमाते भाई!
मानवता की द्रुपद–सुता का चीर खींच मुसकाते भाई,
सबल विलोक, चरण–चुम्बन रत, निर्बल देख दबाते भाई।

रे भाई, मदमाते भाई!
कर दैवीय सरलता का वध सुन्दर कपफन उढ़ाते भाई,
दीवाले के दिन देखे भी दीवाली चमकाते भाई।
रे भाई, मदमाते भाई!
वध्कि–सदन में हरी घास पर रह–रह चित्त डुलाते भाई,
दो पैरों से, चतुष्पदों का हिंसक–दल शरमाते भाई।
हे भाई, मदमाते भाई!
लिये बगल में छुरी, हाथ में माला को सटकाते भाई,
बु(देव की मूरत बनने जी में बने कालिका माई!
हे भाई, मदमाते भाई!
बातों में बह्मत्व बताते कृति कालिमा बढ़ाते भाई,
सर्वेश्वर के शु(रूप को पैरों से ठुकराते भाई।
हे भाई, मदमाते भाई!
जो जीवन थे प्रेम–प्रतीक्षक, जीता उन्हें जलाते भाई,
नयन दया की बाट जोहते, उनमें शूल चुभाते भाई!
हे भाई, मदमाते भाई!
त्रिभुवन में बच्चे जो सोये उन पर वज्र गिराते भाई,
जिस जीवन की दर न कहीं है उसकी ठसक दिखाते भाई!
हे भाई, मदमाते भाई![2]

उपर्युक्त पंक्तियों में माखनलाल चतुर्वेदी ने जिस सूक्ष्मता के साथ सामंती–वर्ग और उसकी संस्कृति के प्रभाव को पहचाना है–यह उनके स्वयं के संघर्षशील जीवन में हुए अनुभवों का सार तत्त्व था। इसीलिए वे अपने दुःखी भाई की वेदना देखकर उसी के साथ मुक्ति का मार्ग खोजते हैं और वह मार्ग है शिक्षा का, किन्तु उसके लिए भी साध्नों का टोटा है और उसकी वेदना से दुःखी होकर कह उठते हैं–

अÂ नहीं है, पफीस नहीं है, पुस्तक है न सहायक हाय!
जी में आता है पढ़–लिख लें पर इसका है नहीं उपाय
कोई हमें पढ़ाओ भाई, हुए हमारे व्याकुल प्राणऋ
हा! हा!! यों रोते पिफरते हैं भारत के भावी विद्वान् ।[3]

'रोटियों की जय' शीर्षक कविता में माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी मुक्ति उसी उपेक्षित वर्ग की मुक्ति के साथ महसूस करते हुए, उनके प्रति प्यार की व्यंजना इन शब्दों में की है–

आज मीठे कीच में उफगे प्रलय की बेल,
कलम कर–कर उठ, पफूलें, सिर–चढ़ों का खेल!
प्रणय–पथ मिलने लगे अब प्रलय–पथ से दोड़,
सूलियों पर उफगने में युग लगाये होड़।[4]

'माता' संग्रह की कई कविताओं में समाज के उपेक्षित–वर्ग की यथार्थपरक स्थितियों का चित्राण हुआ है। 'हे भाई', 'भारत के भावी विद्वान', 'मृदंग' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं, जिनमें कवि ने शोषित और उपेक्षित वर्ग की मुक्ति को स्वर प्रदान किया है। किसान और समाज के शोषित–वर्ग के प्रति करुणा भाव, उनके उÂयन की आकांक्षा माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में उत्तरोत्तर बढ़ती गई है। उपेक्षित और शोषित–वर्ग के उÂयन की आकांक्षा और उसके प्रति हार्दिक संवेदना का भाव माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में उफपरी सहानुभूति पर आधरित नहीं है। माखनलाल चतुर्वेदी की यह चेतना अपने युगीन–समाज के अन्तर्विरोधी चरित्रा, अभिजातवर्ग की समाज में महत्ता और दलित और उपेक्षितवर्ग की निरीह अवस्था के यथार्थपरक विश्लेषण के आधर पर ही निर्मित हुई थी। समाज में सदियों से एक विशेष वर्ग का प्रभुत्व रहा है और यह वर्ग भिÂ– भिÂ रूपों में अपना चरित्रा बदल कर या कभी अपनी विचारधराएँ बदलकर हमेशा शोषण के नए–नए तरीके निकालता रहा है। माखनलाल चतुर्वेदी की आलोचनात्मक–दृष्टि इन बातों को सूक्ष्म रूप से परखती है। 'युगचरण' कविता में इस सभ्यता को एक वर्ग विशेष की सभ्यता कहते हुए उसकी दगाबाजी की प्रवृत्ति का

उद्घाटन उसने अत्यध्कि यथार्थपरक रूप में किया है–

कसी तनी जकड़ी–सी देखी, लगा मृदर्यें. बजाने में।
जीवित जोश जगाने में, ये रूठे हृदय मनाने में,
तान छेड़ देता था–क्षण में होता था लाखों का मोल,
पता नहीं था,–बाहर बजती है–भीतर है भारी पोल ।
धीरे–धीरे देखा–भाला, एक एक गुन टूट गये,
थोथों पर कुरबान हुए!–हा भाग हमारे पफूट गये।[5]

निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि माखनलाल चतुर्वेदी की यथार्थ–दृष्टि अपने युग की समस्याओं, शोषण और अमानवीय मूल्यों के यथार्थपरक रूप के उद्घाटन में ही अध्कि उभरी है। उनके काव्य में उत्तरछायावादी प्रवृत्तियों के साथ यथार्थवादी चेतना का सामंजस्य उनका युग–जीवन के प्रति आत्मिक लगाव और आस्था का ही परिणाम था। युगीन–सामाजिक समस्याओं के प्रति माखनलाल चतुर्वेदी की आलोचनात्मक–दृष्टि में बराबर विकास भी देखा जा सकता है। चौथे दशक के आरम्भ में लिखी ये कविताएँ उनकी प्रगतिशीलता का परिणाम हैं। उत्तरछायावाद के गर्भ से उसकी यथार्थ परम्परा का विकास करते हुए हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद जैसे आन्दोलन का विकास उत्तरछायावादी काव्य की यथार्थ–दृष्टि की व्यापकता का ही परिचायक है।

संदर्भ संकेत

1. सं0 श्रीकान्त जोषी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली, भाग–6 पृष्ठ–210
2. वही पृष्ठ–18–19
3. वही पृष्ठ–21
4. वही पृष्ठ–39
5. वही पृष्ठ–27